Dr. sunil Kumar suman.
Assistant professor (Guest)
D.B. College jaynagar
Dept.of Psychology

Study Material:-
B.A. Part - 1(Gen./Sub.)
Date:- 27 April 2020

Difference between illusion and Hallucination

भ्रम एवं विभ्रम में अंतर

भ्रम एक प्रकार का गलत प्रत्यक्षण(False perception) है क्योंकि भ्रम एक प्रकार का प्रत्यक्षन है, इसमें उद्दीपक का होना अनिवार्य है, परंतु जब हमें प्रत्यक्षण बिना
किसी उद्दीपक के होता है तो हम इसे विभ्रम (Hallucination) कहते हैं जैसे अंधेरे में व्यक्ति को खंभा भी ऐसे लगता है कि कोई आदमी खड़ा है यह भ्रम हुआ क्योंकि इसमें उद्दीपक खंभा है, परंतु अंधेरे में कोई भी उद्दीपक नहीं है और व्यक्ति को लगता है कि कोई है तो विभ्रम का उदाहरण है।
1. भ्रम में उद्दीपक होता है परंतु विभ्रम में उद्दीपक नहीं होता है। जैसे:- अंधेरे में रस्सी को सांप के रूप मे देखना एक भ्रम (illusion) का उदाहरण है परंतु अंधेरे कमरे में कुछ नहीं होने पर भी यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु को देखता है तो यह विभ्रम का उदाहरण है।
2. भ्रम अधिकतर बाह्य कारणों से होता है ,परंतु विभ्रम अधिकतम आत्म गत कारकों (subjective Factors) जैसे:- चिंता, भय, मानसिक रोग आदि कारणों से होता है।
3. भ्रम में उद्दीपक मौजूद रहता है अतः इसका स्वरूप(Nature) करीब-करीब स्पष्ट होता है ,परंतु विभ्रम में उद्दीपक नहीं होता है इसका स्वरूप अस्पष्ट होता है
4. विभ्रम अधिकतर असामान्य व्यक्तियों (abnormal person) में होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि विभ्रम सामान्य व्यक्तियों को नहीं होता है। भ्रम सामान्य व्यक्तियों और असामान्य व्यक्तियों दोनों को होता है। लेकिन और असामान्य व्यक्तियों में ज्यादा होता है।
5. सामान्य व्यक्ति के भ्रम का स्वरूप स्थाई तथा अस्थाई दोनों ही होता है परंतु सामान्य व्यक्तियों में विभ्रम का स्वरूप हमेशा अस्थाई होता है परंतु असामान्य व्यक्तियों में विभ्रम का स्वरूप स्थाई होता है।
*
प्रत्यक्षनात्मक संगठन:- जन्मजात या अर्जित *(perceptual organization:-Innate or Acquired)**

प्रत्यक्षनातमक संगठन की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति किसी भी वस्तु का प्रत्यक्षण एक निश्चित पृष्ठभूमि पर उसे एक निश्चित एवं स्पष्ट आकार के साथ करता है। लेकिन प्रश्न यह की प्रत्यक्ष नातमक संगठन की प्रक्रिया जन्मजात होती है या अर्जित। इस संबंध में गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों तथा व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के बीच काफी मतभेद रहा है। गेस्टाल्ट वादियों (Gestaltist) के अनुसार प्रत्यक्षनातमक संगठन

जन्मजात होता है, जबकि व्यवहार वादियों के अनुसार प्रत्यक्षनामक संगठन अर्जित होता है। गेस्टाल्टवादियों तथा व्यवहार वादियों दोनों ने ही अपने-अपने पक्ष में अनेक पुख्ता सबूत दिए जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्यक्ष नातमक संगठन का स्वरूप अंशतः अर्जित है तथा अंशतः जन्मजात है। मनुष्य तथा पशुओं दोनों के लिए प्रत्यक्ष नातमक संगठन के सरल पहलु जैसे:- आकार का प्रत्यक्षण, कंटूर निर्माण (contour Formation), आदि जन्मजात होते हैं तथा जटिल पहलू जैसे प्रत्यक्षनातमक विभेदन(perceptual discrimination) आदि अर्जित होते हैं।